

फर्वा s. प्र०.

1. फल, फलति; पफाल, फलतुम्, फलिथ P. 6, 4, 122. Vop. 8, 52. 71. 1) *bersten, entzweispringen* (vgl. स्फुट्) Dhātup. 13, 9. शतधास्य फलेन्मूर्धा MBh. 3, 16564. 7, 6265. Daç. 2, 21. 23. कृदयम् R. 2, 61, 9. 6, 78, 23. मुष्क-मेकनवस्तिभिः । फलद्विस्व Suçr. 2, 829. 6. तस्य मूर्धानमासाय पफाला-सिवो हि सः MBh. 3, 1603. Märk. P. 83, 7. नभः पफालेव MBh. 8, 4944. 13, 7472. — 2) *zurückprallen, zurückstrahlen*: एवमेव खलु मरुदभिच-रतिक्रमः कात्स्न्येनात्मने फलति Bhāg. P. 5, 9, 20. भासः Kir. 3, 38. — फुल्ल

s. besonders.

— intens. पम्फुल्यते, पम्फुलीति, पम्फुल्लि P. 7, 4, 87. 88. Vop. 20, 10.

— उद् simpl. s. उत्फाल, उत्फुल्ल. — caus. *aufreissen, aufsperrn* (die Augen): उत्फाल्य विपुले नेत्रे MBh. 1, 5977. 2, 2392. 5, 5817.

— प्रोद् s. प्रोत्फुल्ल.

— नि s. निफालन (fehlerhaft für निभालन).

— प्र s. प्रफुल्ल, प्रफुल्लि, प्रफुल्ल.

— प्रति *zurückprallen, zurückstrahlen*: कन्दुको भित्तिनिक्षिप्त इव प्र-तिफलन्मुहुः Spr. 3863. ग्रीष्मे हि सिकतास्वर्ककराः प्रतिफलिता जल-वेनाभाति H. 101, Sch. मेघप्रतिफलिता हि सूर्यश्मयो धनुराकरेण दृश्य-ते Kshirasvāmin beim Schol. zu H. 179. Çiç. 4, 67. 9, 37. Naish. 4, 13. मोक्षतीति विशुद्धो मुनिभिर्भक्तिता मोक्षसंक्रान्तमूर्तिः सान्नी स्वान्ते तदु-त्ये प्रतिफलितवपुरित्यादि मुक्तिवाद्गादाधरी ॥ ÇKDn. u. प्रतिफलितं. — Vgl. प्रतिफल fgg.

— वि *bersten, entzweispringen*: नभश्च विपफाल कृ MBh. 12, 13280.

— सम् s. संफुल्ल.

2. फल (von फल), फलति *Früchte bringen, — geben, reifen, Folgehaben, in Erfüllung gehen* Dhātup. 13, 23. दुमाः फलन्ति Hariv. 12799. पोषकाराय फलन्ति दुमाः Spr. 1734. 921. Bhāṭṭ. 3, 42. यथा च वेणुः कदली नलो वा फल-त्यभावाय न भूतये ऽत्मनः Draup. 5, 9. अर्थिनां प्रार्थिताः पूर्वे (कल्पदुमाः) फलन्त्यन्ये (सन्तः) स्वयं यतः Spr. 3883. 3768. फलति दानमकीरुहः Rāga-Tar. 4, 234. शर्येव फलत्यागु शालिः Spr. 3000. बीजानि 929. पुण्यबी-जम् Kathās. 27, 121. नद्यः समुद्रा गिरयः सवनस्पतिवीरुधः । फलत्पयोष-धयः सर्वाः काममन्वृतु तत्र वै ॥ Bhāg. P. 1, 40, 5. नाधर्मश्चरितो लोके स-द्यः फलति गौरिव Spr. 1529. व्यवसायं विना कर्म (das Schicksal) न फ-लति Pañāt. 133, 17. फलिष्यति न ते विद्या MBh. 1, 3275. 12, 12359. स्वकृतं कर्म 3, 12635. 13, 304. Spr. 1932. Vop. 2, 47. एवं कुकर्म सर्वस्य फलत्मात्मनि सर्वदा Kathās. 17, 148. MBh. 5, 1700. Hariv. 965. ad Megh. 18. धातुः फलति लावण्यनिर्माणं तदिदं त्रयि Kathās. 30, 34. खलः करो-ति डुर्वृत्तं नूनं फलति साधुषु so v. a. *Gute müssen es büßen* Spr. 799. अमोघं हि मरुषणिं वीर्यं फलति तत्तणाम् Kathās. 32, 103. नैवाकृतिः फलति नैव कुलं न शीलम् Spr. 1648. नीतिः 2301. अन्यथा विरुद्धं ते फ-लिष्यति Hit. 58, 18. फलिष्यति ध्रुवं तानि (निमित्तानि) रावणस्य निबर्ह-णात् *werden in Erfüllung gehen* R. 6, 74, 31. वेदोक्तमायुर्मर्त्यानामाशिष-श्रैव कर्मणाम् । फलत्यनुयुगं लोके प्रभावश्च शरीरिणाम् ॥ M. 1, 84. यदा न फलुः लण्डाचराणां मनोरथाः Bhāṭṭ. 14, 113. Mit dem instr. der Frucht: नानाफलैः फलति कल्पलतेव भूमिः Spr. 2602. mit dem acc.: काङ्क्षितानि फलन्ति स्म ते दुमाः Hariv. 9253. सर्वकामान्फलन्ति (नगाः) R. 4, 44, 94. 97. 100. fg. Spr. 2154. 2755. Kathās. 27, 122. सेयं नीतिमहावह्नी किं नाम न फलेत्फलम् 33, 85. Bhāṭṭ. 12, 66. med. mit einem acc.: आचारः

फलते धर्ममाचारः फलते धनम् MBh. 5, 3887. फलितं (adj. von फल und partic. von फल्) gaṇa तारकादि zu P. 5, 2, 36. Vop. 7, 80. *Früchte tra- gend, mit Früchten versehen*: वनस्पति MBh. 1, 5884. लता 3, 10042. 5, 1117 (st. dessen फलवत् 1, 5608. 12, 5277). Spr. 3706. Ragh. 13, 53. Ka- thās. 42, 5. *was Früchte gebracht hat, Erfolg gehabt hat*: व्रत 3, 23. 21, 101. अश्रूकृता व्यापदिकापि फलिता मम 29, 109. कार्य Spr. 2430. तव सुनीतिः Daçak. in Benf. Chr. 196, 1. कामाः in Erfüllung gegangen Ragh. 13, 59. तदुत्पत्तिफलितस्वमनोरथ Kathās. 42, 71. शोभवं वाक्यम् 46, 84. एवं च सूत्रं न कार्यमिति फलितम् so v. a. *dieses ergibt sich als Folge davon* Pat. zu P. 4, 3, 133. एवं चात्र शास्त्रे समासिदंशार्कितत्वं गुणव-चनत्वं फलितम् P. 1, 4, 1. Vārtt. 6. Sch. फलितम् impers.: फलितं वृक्षै-स्तत्तणारेपितैः *die Bäume trugen Früchte* Rāga-Tar. 2, 15. फलितं तां वदस्माकं कपटप्रबन्धेन Hit. 21, 13. Kull. zu M. 1, 4. फलिता adj. f. men- struierend Nigh. Pr. — Statt स फलयन् Rāga-Tar. 2, 142 ist mit der Calc. Ausg. सफलयन् zu schreiben.

— वि *Früchte ansetzen, zur Reife gelangen*: भव्यमुद्ध्याः समारम्भाः प्र-त्यवेक्षानिरूपयाः । गर्भशालिसधर्माणस्तस्य गूढं विफेलिरे (विपेचिरे Stenz-ler) ॥ Ragh. ed. Calc. 17, 52.

3. फल्, फलति v. l. für फल् *gehen, sich bewegen* Kavikalp. im ÇKDn. फल n. AK. 3, 6, 23. m. n. gaṇa अर्थर्थादि zu P. 2, 4, 31. Trik. 3, 5, 14. m. f. n. 22. 1) n. *Frucht, insbes. Baumfrucht, fructus* AK. 2, 4, 4, 15. 19. 2, 47. 5, 35. 3, 4, 26, 203. H. 1130. a. n. 2, 498. Med. I. 33. Vālg. beim Schol. zu Kir. 4, 21. RV. 3, 43, 4. 10, 146, 5. यदि वृताद्भ्यर्पितफलं तत् AV. 6, 124, 2. VS. 10, 13. Ait. Br. 7, 30. TS. 7, 3, 44, 1. Çat. Br. 13, 4, 8, 8. 14, 9, 4, 1. Kauç. 21. 30. 33. MBh. 3, 2534. 2816. R. 1, 9, 5. Suçr. 1, 158, 8. 15. 209, 3. Spr. 1930. 1931. 1934. 3887. Ragh. 1, 49. Vet. in LA. 2, 5. fg. औषध्यः फलपाकात्ता बहुपुष्पफलोपगमाः M. 1, 46. Halāṅ. 2, 25. परिणतं Megh. 18. परिणति 24. पातन M. 5, 130. कल्पिष्यमाणा म-रुते फलाय वसुंधरा काल इवाप्तवीजा Çāk. 151. मूलफल n. sg. M. 3, 267. 4, 29. 247. 8, 339. फलमूल n. sg. 12, 67. R. 1, 46, 10. du. M. 10, 87. pl. MBh. 3, 2307. फलमूलार्थम् Kathās. 9, 62. पुष्पफलम् Spr. 3049. पुष्पमूल-फल pl. M. 5, 10. 157. 6, 13. 21. 8, 289. 11, 165. sg. 7, 131. शाकमूलफल pl. 5, 119. 6, 15. 8, 331. sg. 6, 5. दाडिमं Kern Spr. 1109. आत्मापराधव-त्तस्य फलान्येतानि देहिनाम् 2644. उदेति पूर्वं कुसुमं ततः फलम् Çāk. 189. फलेन फलमादिशेत् *mit der Frucht weise man auf die Frucht hin* so v. a. *mit einer Gabe, die man reicht. spiele man auf eine Ge- gengabe an*, Spr. 2632. fg. Am Ende eines adj. comp. wann ई und wann आ P. 4, 1, 64. nebst Vārttika 2—4. Vop. 4, 15. बहुमूलफला MBh. 3, 8309. Rāga-Tar. 4, 295. Vet. in LA. 33, 19. — 2) n. *Erfolg, Ergebniss, Wirkung, Vortheil oder Nachtheil, Gewinn oder Verlust. Vergeltung, Belohnung oder Strafe* AK. 2, 8, 1, 29. 2, 9, 80. 3, 4, 9, 41. 26, 203. Trik. 3, 3, 400. H. 869. 1446. H. ad. Med. Halāṅ. 1, 118. 4, 92. Vālg. a. a. O. (= लाभ, निष्पत्ति, योग, धनः) यथा कुर्वन्ति स उपयो यन्निष्पादयन्ति तत्फलम् Suçr. 1, 152, 2. फलयुक्तानि कर्माणि Kīrtj. Çr. 4, 1, 2. 2, 4. 10. 6, 9. 10, 5, 12. दृष्टं *dessen Wirkung erprobt ist* Suçr. 2, 189, 16. कल्पेदं कर्मणाः फ-लम् MBh. 3, 2552. R. 1, 74, 11. त्यक्त्वा कर्मफलासङ्गम् Bhāg. 4, 20. फलानु-मेयाः प्रारम्भाः Ragh. 1, 20. विलम्बितफलैः — मनोरथैः 33. शाश्वतदिमा-श्रमपदं स्फुरति च बाहुः कुतः फलमिहास्य Çāk. 15. कृषिं Megh. 16. न